आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 11 जुलाई-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

पशुओं को रोगों से बचाव का सर्वोत्तम उपाय टीकाकरण

प्रिय, पशुपालक एवं किसान भाइयों और बहनो !

राम–राम सा।

पूरे विश्व में पशुचिकित्सा दिवस (27 अप्रेल 2019) से इस वर्ष को ''टीकाकरण के महत्व'' की थीम पर मनाया जा रहा है। हमारे यहां एक कहावत प्रचलित है कि ''बचाव ही उपचार है।'' रोग प्रतिरक्षा के लिए मनुष्यों की भांति पशुओं में भी टीकाकरण अत्यंत आवश्यक है। यह सूक्ष्म जीवियों के संक्रमण से बचाता है और विभिन्न प्रकार की बीमारियों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है। नियमित टीकाकरण पशुपालकों को संभावित बीमारियों पर होने वाले उपचार में आर्थिक क्षति से मुक्ति प्रदान करता है और पशु की उत्पादन क्षमता पर होने वाले दुष्प्रभावों से बचाता है। टीकाकरण कार्यक्रम का उद्देश्य पशुओं को विभिन्न रोगों से बचाव द्वारा पशु और जनस्वास्थ को बढ़ावा देना है। प्रत्येक बीमारी का टीका अलग होता है तथा एक बीमारी का टीका केवल उसी बीमारी से प्रतिरक्षा प्रदान करता है। किसी बीमारी को फैलने से रोकने के लिए उस क्षेत्र विशेष अथवा पशुओं के समूह के चारों ओर के स्वस्थ पशुओं को टीके लगाकर प्रतिरक्षित क्षेत्र उत्पन्न कर देना चाहिए। बहुत से विषाणु जनित रोग लाइलाज हैं तथा इनसे बचाव के लिए टीकाकरण ही एक मात्र उपाय है। पशुओं को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाव के लिए पशुपालकों का कर्त्तव्य बनता है कि वे पशु चिकित्सक की सलाह पर शुरूआत में ही टीकाकरण करवा लें तथा प्रति वर्ष पुनः टीकाकरण करायें। वर्तमान में जूनोटिक रोगों (पशुओं से मनुष्य में तथा मनुष्य से पशुओं में फैलने वाले) से बचने की भी चुनौती हमारे सामने है। इनमें रेबीज, एन्थ्रेक्स, ब्रुसेलोसिस, गाय की चेचक व क्षय जैसे रोग हैं। टीकाकरण से संक्रामक और जूनोटिक जैसे गंभीर रोगों से बचा जा सकता है। टीके पशु के शरीर में एक जटिल तरीके से काम करते हैं अतः रोग विशेष के प्रति निर्धारित टीके स्वस्थ पशु को ही लगाना चाहिए। पशुपालकों को टीके के बनने की तिथि तथा उसके प्रभावहीन होने की तिथि पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। पशुपालकों को अपने पशुओं के स्वास्थ्य व टीकाकरण का कार्यक्रम निर्धारित कर लेना चाहिए। पशुओं की उम्र के हिसाब से प्रथम टीका, बूस्टर टीका और पुनः टीकाकरण की निर्धारित अवधि का ध्यान रखना जरूरी है। पशु चिकित्सक की सलाह पर कृमिनाशक कार्यक्रम और रोगों की नियमित जांचें करवा लेने के प्रति भी सर्तक रहना चाहिए।

वेटरनरी विश्वविद्यालय की टोल फ्री–हैल्प लाइन 1800 180 6224 द्वारा पशु चिकित्सा विशेषज्ञ सेवाओं का उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के बीकानेर, नवानियां (उदयपुर) और जयपुर स्थित पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालयों और विभिन्न जिलों में स्थित पशुधन अनुसंधान केन्द्रों तथा पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों से भी इस बाबत उचित परामर्श और मार्गदर्शन लिया जा सकता है। आओ ! हम सब मिलकर स्वस्थ और निरोगी पशुधन के टीकाकरण अभियान को सफल बनाएं।

जय हिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

विश्व दुग्ध दिवस पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

विश्व दुग्ध दिवस 1 जून को वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के महाविद्यालयों और संस्थानों में पशुपालक जागरूकता, दुग्ध जांच और उसके महत्व पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान जयपुर में आयोजित कार्यक्रम

में राज्य के अतिरिक्त मुख्य सचिव (कृषि एवं पशुपालन) श्री पवन कुमार गोयल ने कहा कि दूध की गुणवत्ता व मानव स्वास्थ्य पर इसके महत्वपूर्ण प्रभाव के प्रति समाज के विभिन्न वर्गो में जागरूकता उत्पन्न करने के लिये इस तरह के संवेदीकरण कार्यक्रम आवश्यक हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि विश्व में भारत एक अग्रणी दुग्ध उत्पादक देश है। दुग्ध उत्पादन के साथ–साथ इसकी गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता है। दूध एक संतुलित और पूर्ण आहार है क्योंकि यह सभी आवश्यक अमीनो अम्ल, वसीय अम्ल, विटामिन्स की पूर्ति करता है। कार्यक्रम में राज्य के पशुपालन निदेशक डॉ. शैलेश शर्मा ने कहा कि लोगों को मिलावटी दूध के दुष्परिणामों से अवगत कराने में पशुचिकित्सकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा ने देशी नस्ल की गायों, भैसों तथा बकरियों में पाए जाने वाले ए–2 किस्म के दूध को स्वास्थ्य की दृष्टि से सबसे श्रेष्ठ बताते हुए उसके महत्व की जानकारी दी। कार्यक्रम में पशुचिकित्सकों ने भी भागीदारी की। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि विश्व दुग्ध दिवस द्वारा इस बार दी गई थीम "आज और प्रतिदिन दूध पीएं" विषय पर जागरूकता के लिए विश्वविद्यालय के सभी पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर पशुपालक जागरूकता गोष्ठियां और जिलों में स्थित पशुचिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर दूध गुणवत्ता एवं सुरक्षा पहलू पर गोष्ठियों और दूध में थनैला के दुष्प्रभावों की जांच करके पशुपालकों को अवगत करवाया गया। वेटरनरी कॉलेज बीकानेर में एक लघु फिल्म का प्रदर्शन और वेटरनरी कॉलेज नवानियां (उदयपुर) में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

डेयरी और मीट प्रौद्योगिकी के डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में प्रवेश

इन्दिरा गांधी खुला विश्वविद्यालय द्वारा युवाओं को स्वरोजगार में सहायक डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए 31 जुलाई 2019 तक आवेदन किये जा सकते हैं। इग्नू के वेटरनरी विश्वविद्यालय में कार्यक्रम अध्ययन केन्द्र के समन्वयक डॉ. आर.एन. कच्छावा ने बताया कि डेयरी प्रौद्योगिकी और मांस प्रौद्योगिकी में एक–एक साल के डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में स्कूल शिक्षा 10+2 (किसी भी विषय में) उतीर्ण छात्र–छात्राएं प्रवेश ले सकते हैं। अध्ययन सामग्री इन्दिरा गांधी खुला विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध करवाई जायेगी। डिप्लोमा में प्रायोगिक कार्यों के लिए 1 माह का प्रशिक्षण वेटरनरी विश्वविद्यालय में लेना होगा। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन–जाति के विद्यार्थियों के लिए यह पाठ्यक्रम निःशुल्क होगा। इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, जोधपुर के सहायक निदेशक डॉ. मुख्तार अली ने बताया कि इग्नू की वेबसाईट www.ignou.ac.in पर सभी प्रकार के पाठ्यक्रमों और प्रवेश के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशु कल्याण के लघु अवधि पाठ्यक्रम होंगे शुरू : कुलपति प्रो. शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय में राज्य मद में स्थापित किए गए केन्द्र अब उन्नत अनुसंधान केन्द्र के रूप में कार्य करेंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में 12 जून को आयोजित बैठक में इन केन्द्रों की कार्य योजना की समीक्षा की गई। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि पशुचिकित्सा में अनुसंधान, पशु उपचार, प्रयोगशाला जांचों के दौरान होने वाले जैविक अपशिष्टों से विषाणु एवं घातक जीवाणुओं से संक्रमण का खतरा रहता है अतः इन्हें उपयुक्त तरीके से अलग–अलग करके सुरक्षित तरीके से निस्तारित किया जाना बहुत आवश्यक है। ऐसा नहीं करने से मनुष्य, पशु और पर्यावरण को गंभीर खतरा हो सकता है। विश्वविद्यालय में पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट तकनीकी निस्तारण केन्द्र के माध्यम से पशुपालन विभाग के उपनिदेशकों और पशुचिकित्सा अधिकारियों का प्रशिक्षण शीघ्र ही शुरू किया जाएगा। कुलपति प्रो. शर्मा ने सभी केन्द्र अन्वेषकों को निर्देश दिए कि वे पशुकल्याण से सम्बद्ध लघु अवधि के सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू कर आम जन में जागरूकता लाऐं। उन्होंने कहा कि परंपरागत पशु चिकित्सा पद्धतियों एवं वैकल्पिक औषधियों पर अनुसंधान द्वारा उपचार की सस्ती और देशी दवाओं की उपयोगिता का प्रसार किया जाना चाहिए। प्रो. शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के आठों पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर जैविक पशुपालन के प्रमाणीकरण की कार्यवाही शुरू की गई है। पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के मार्फत वेटरनरी इमरजैन्सी रिस्पांस टीमों के प्रशिक्षण के लिए एक माड्यूल विकसित कर पशुपालकों को जाग्रत किया जाएगा। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र के माध्यम से स्कूल व कॉलेज के विद्यार्थियों और पशुपालकों को विविध प्रजातियों के संरक्षण के प्रति जागरूक किये जाने के कार्यक्रम आयोजित किये जाएं। बैठक में अनुसंधान केन्द्रों के प्रमुख अन्वेषकों ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किए।

हैल्थ चैकअप शिविर

उच्च रक्तचाप को रोकने के लिए तनाव कम करना जरूरीः कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

एस.पी. मेडिकल कॉलेज, रेडक्रॉस सोसाइटी और वेटरनरी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में उच्च रक्तचाप जागरूकता अभियान के तहत 18 जून को वेटरनरी विश्वविद्यालय में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। एस.पी. मेडिकल कॉलेज, औषधीय विभाग के प्रो. बी.के. गुप्ता के नेतृत्व में चिकित्सा दल ने लोगों के स्वास्थ्य की जांच–पड़ताल कर परामर्श दिया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने शिविर का विधिवत् उद्घाटन करते हुए कहा कि उच्च रक्तचाप के लिए जीवन में वातावरण और खानपान की शैली के साथ तनाव की स्थिति

जिम्मेदार है। पशुओं में उच्च रक्तचाप के लक्षण परिलक्षित होते हैं जिसमें उनकी उत्पादन क्षमता कम हो जाती है लेकिन मनुष्यों में तनाव की स्थिति का आंकलन नहीं हो पाता। हमारे लिए "वन हैल्थमिशन" की उपयोगिता और तनाव को कम करने के लिए समुचित प्रबंधन किया जाना जरूरी है।

पंचम अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस

अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के दीवाने आम में 21 जून को प्रातः 6:30 बजे वेटरनरी विद्यालय के शिक्षकों, छात्र–छात्राओं, कर्मचारियों और उनके परिवारजनों ने उपस्थित होकर योगाभ्यास किया तथा शपथ ग्रहण की। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलसचिव अजीत सिंह, वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने योगाभ्यास में भाग लिया। शिविर में पतंजलि संस्थान के योग प्रशिक्षक जगदीश लाल टेलर ने योग की विभिन्न विधाओं–के आसन, प्रणायाम, अनुलोम–विलोम, कपालभाती, मयूरासन का योगाभ्यास करवाया। स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर में योग शिक्षक डॉ. रामावतार शर्मा ने शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को योगाभ्यास करवाया। संस्थान की अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा ने योग को दैनिक जीवन में अपनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों की योगासन प्रतियोगिता, योग पर फिल्म और पोस्टर प्रदर्शन किया गया। वेटरनरी कॉलेज नवानियां (उदयपुर) में अधिष्ठाता प्रो. आर.के. धूड़िया के नेतृत्व में शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने योगाभ्यास किया। इस अवसर पर प्रो. धूड़िया ने कहा कि योग क्रियाएं मनुष्य के शारीरिक और मानसिक विकास में सहायक हैं।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 7, 14, 15, 17, 18, 19 एवं 20 जून को गांव रामसिसर चैनाणिया, खेजड़ा, पूनूसर, टिडियासर, मालकसर, देपालसर एवं बायला गांवों में तथा 25 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 179 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 4, 7, 11 एवं 20 जून को गांव रातासर, नयावाली, पदमपुर एवं 2 एमएल गांवो में तथा दिनांक 17 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 147 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 11, 12, 14, 15, 17, 19, 20, 21, 22 एवं 25 जून को गांव वेरा जेतपुरा, राडबर, छापोल, बावली, नवारा, जाम्बुडी, सांगवाड़ा, डबाणी, तंरूगी एवं बोसा गांवो में तथा दिनांक 24 एवं 26 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 305 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 10, 11, 12, 15, 17, 18, 19, 20 एवं 22 जून को गांव हुडास, मणु, ढिंगसरी, गौराऊ, सांडास, मामडोदा, मालगांव, सींवा और हिरावत गांवों में तथा दिनांक 7 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 312 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 312 पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 6, 8, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 17 एवं 19 जून को गांव बालावास, बडलाखेड़ा, कुराडी, हरपुरा, नया गांव कुमावतो का, उदयपुर खेडा, शिखरानी, सिंगाडिया,सूरतीखेडा एवं गोविया गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 312 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 3, 7, 10, 11, 15, 18, 21, 22 एवं 25 जून को गांव खुमाण सागर, नरवानिया फलां, घाटा फलां, राती घाटी, थाना, खाजेवाला, उपला फलां, रातापानी एवं घूघरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 322 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 7, 8, 10, 11, 12, 14, 15, 17 एवं 18 जून को गांव सेंथरा, ऊंचा गांव, बीरमपुरा, फरसौ, गिरसै, सुन्हेरा, रायपुर, पिंगौरा, एवं खोहरी गांवो में तथा दिनांक 1 एवं 21 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय

पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 33 महिला पशुपालकों सहित कुल 220 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 17, 18, 19, 20, 21, 22, 24 एवं 25 जून को गांव पलोई, भरचला, सोहेला, दूनी, बड़ागांव, सुखनिवासपुरा, सरोली एवं बंधली गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 176 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 7, 8, 10, 17, 22 एवं 25 जून को गांव भादवा, खोखराना, खिलेरिया, खियारा, उदेशिया एवं भिखराना गांवों में तथा दिनांक 15 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 184 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 265 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 10, 11, 14, 15, 17, 19, 20, 21 एवं 26 जून को गांव देवली माछियान, मोरपा, बिशनपुरा, कछोलिया, लाड़पुरा, डूंगरज्या, गुरला, खेरी धाकड़ान एवं घटोलिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 265 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 7, 8, 10, 14, 15, 17, 20, 21, 22 एवं 24 जून को गांव आंतरी, अमरपुरा, कन्नोज, पूनावली, बनाकिया, पावटिया, पायरी, भीलखेड़ा, ओडून्दा एवं साण्ड गांवों में तथा दिनांक 4 एवं 11 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 300 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 10, 11, 12, 14, 15, 17, 18, 19, 20 एवं 21 जून को गांव चांदपुर, सहानपुर, झील का पूरा, नगला भगत, घेर, हैदलपुर, रजोरा, मतीराम का नगला, बारा एवं नंदपुरा गांवों में तथा दिनांक 22 एवं 24 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 282 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 10, 12, 14, 15, 17, 18, 19, 20, 24 एवं 25 जून को गांव कूकन्डा, बासनी निकूबान, जाजीवाल खिचियान, जाजीवाल गहलोता, जालेली दईकडा, जाजीवाल भंडारिया, जाजीवाल कलु, कानावास का पाना एवं जालेली फोजदारा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 78 महिला पशुपालकों सहित कुल 230 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 13, 14 एवं 19 जून को गांव फेफाना, गंधेली एवं मेघाना गांवों में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 84 किसानों ने भाग लिया।

जुलाई माह में पशु प्रबंधन कैसे करें

पशुपालक भाईयो, जून माह में भीषण गर्मी के बाद जुलाई माह कुछ राहत देने वाला होता है, क्योंकि इस माह राज्य के कई स्थानों पर वर्षा शुरू हो जाती है। इस वर्ष मानसून कुछ देरी से आया है और सभी जिलों में वर्षा पूर्ण रूप से सक्रिय भी नहीं हुई है फिर भी वातावरण में नमी (आर्द्रता) बढ़ गई है जिससे अधिकतर भू–भाग में कच्ची हरी घास भी उगने लगी है। कई जगह बरसाती पानी से पोखर, गड्डे इत्यादि भी भरने लगे है। जुलाई माह में गर्मी, बरसात व ठण्डक क्रमवार चलते रहते हैं, जिसकी वजह से पशु तनावग्रस्त भी हो सकते हैं। गाय–भैंसों में इस समय गलघोंटू, लगड़ा बुखार व न्यूमोनिया की संभावना काफी बढ़ जाती है। भेड़–बकरियों में कच्चे हरे घास के ज्यादा खाने से फड़किया रोग से काफी संख्या में मौत हो सकती है। इस समय दूषित बरसाती पानी पीने से पशुओं में दस्त व अन्य आंतो से सम्बन्धित रोग हो सकते हैं। दूषित चारे–पानी से अन्तःपरजीवी रोग भी इस मौसम में खूब देखने को मिलते है। अतः पशुपालकों को इस माह विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि उनके पशु स्वस्थ रहे सके और किसी प्रकार से पशु उत्पादन पर विपरीत असर ना पड़े :

1. पशु को दिन के समय छायादार स्थान पर या पशुघर में बांधे।
2. बन्द पशुघर में स्वच्छ हवा का आदान–प्रदान आवश्यक हो अतः रोशनदान, खिड़की व दरवाजे खुले रखें।
3. पशुओं को पीने के लिए ठंडा व स्वच्छ पानी उपलब्ध करायें।
4. उमस के समय पशु को आवश्यकता से अधिक जुताई व बोझा ढ़ोने के काम ना ले।
5. भेड़–बकरियों को चारागाह में बहुत अधिक चारा न चरने दें अन्यथा उनको फड़किया रोग होने की संभावना रहती है।
6. पशुघर में चारा–दाना ऊंचे स्थान पर रखें, ताकि बरसाती पानी से चारा–दाना संक्रमित होने से बचाया जा सके।
7. नवजात पशुओं को बरसात में भीगने से बचायें ताकि वो न्यूमोनिया के शिकार ना हो।
8. यदि अभी तक फड़किया, गलघोंटू व लंगड़ा बुखार के टीके नहीं लगवाये हो तो पशुचिकित्सक से जानकारी लेकर पशुओं का टीकाकरण करवा लें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पशुओं के थनों में होने वाले रोग एवं उनकी रोकथाम

भारतीय अर्थव्यवस्था में दुधारू पशुओं से होने वाली आय का विशेष महत्व है। बेहतर दुग्ध उत्पादन के लिए दुधारू पशुओं का स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है। स्वस्थ थन/अयन ही सही दूध उत्पादित कर सकते हैं। अतः दुधारू पशुओं से बेहतर दुग्ध उत्पादन के लिए उनके अयन व थनों का स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है। पशु शरीर में अयन वो स्थान है जहां रक्त का परिसंचरण ज्यादा होता है तथा दूग्ध सूक्ष्म जीवों की वृद्धि के लिए एक अच्छे माध्यम का कार्य भी करता है। अतः अगर थनों की साफ–सफाई सही तरीके से नहीं की जाये तो बहुत से रोग थनों में होने की संभावनाएं बढ़ जाती है। थनैला दुधारू पशुओं के थनों में प्रमुखताः से पाया जाने वाला रोग है, लेकिन इसके अलावा भी अन्य रोग थनों को प्रभावित करते हैं जैसे– थनों के घाव, थनों का ट्यूमर, पेपीलोमा (वार्ट्स) आदि।

थनैला रोगः– थनैला रोग का अर्थ दूध देने वाले पशु के अयन एवं थन की सूजन तथा दूध की मात्रा एवं रासायनिक संगठन में अन्तर आना होता है। अयन में सूजन, अयन का गर्म होना एवं अयन का रंग हल्का लाल होना इस रोग की प्रमुख पहचान है।

थनैला रोग के कारणः– थनैला रोग कई कारणों से होता है जैसे पशुओं में अधिक दुग्ध उत्पादन क्षमता का होना , गलत तरीके से दूध निकालना, दूध का अयन में ज्यादा देर तक भरा रहना, थनों को नवजातों द्वारा काटा जाना, गंदी व संक्रमित पशुशाला, थन या अयन पर चोट लग जाना, गंदे हाथों से दूध निकालना, स्टेरिलाइज (जीवाणु रहित) किये बिना ही टीट साईफन का प्रयोग या किसी अन्य दूसरे औजारों से दूध निकालना आदि। यह रोग विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं, विषाणुओं व फंफूदी से होता है। यह रोग गाय व भैसों में मुख्यतया पाया जाता है।

थनैला रोग के लक्षणः– थनैला रोग को ग्रसित पशुओं के लक्षणों से पहचाना जा सकता है। पशु के थन व अयन छूने में इनका आकार बड़ा लगे तथा सख्त लगे तो समझना चाहिए की पशु थनैला रोग से ग्रसित है। कई बार पशु थनैला रोग से ग्रसित तो होता है लेकिन लक्षण दिखाई नहीं देते, उसे सबक्लीनिकल मेस्टाइटिस कहते हैं। दूध में किसी भी तरह का परिवर्तन नजर आते ही पशु चिकित्सक से जाँच करवानी चाहिए।

1. थनैला रोग से ग्रसित पशु के थन व अयन पर सूजन आती है तथा फाइब्रोसिस के उपरान्त सख्त भी हो जाते हैं।
2. दूध पतला या गाढ़ा या फटा हुआ सा हो जाता है और दूध का स्वाद भी बदल जाता है।
3. कभी–कभी दूध के साथ–साथ रक्त भी आता है, दूध लाल या पीला भी हो सकता है तथा दूध में बदबू भी आती है।
4. कभी–कभी थनों के छिद्र भी बंद हो जाते हैं व दूध निकलना बंद हो जाता हैं।
5. पशु की दूध उत्पादन क्षमता कम हो जाती है। इस रोग का उपचार समय से न करने पर पूरा अयन खराब हो सकता है, दूध उत्पादन बंद हो सकता है।

रोग का फैलनाः– थनैला रोग सामान्यतया अधिक गर्मी तथा बरसात के मौसम में तथा अधिक दूध उत्पादन क्षमता वाले पशुओं में अधिक होता है। पशु के ब्याहने के बाद शुरूआती दो–तीन महीनों में थनैला रोग की सम्भावना अधिक होती है। दूध निकालने वाला व्यक्ति यदि ठीक से हाथ साफ नहीं करते तो ये रोग एक से दूसरे पशु में भी फैल सकता है। पशु शाला में गंदगी व संक्रमण भी इस रोग का एक कारण है। अधिक उम्र के पशु जो चार–पाँच ब्यात से अधिक हो, में थनैला रोग होने की संभावना अधिक रहती है। थनैला रोग से ग्रसित पशु का दूध पीने से पशु के नवजातों में भी संक्रमण हो जाता है, उनकी वृद्धि कम हो जाती है। यदि एक बार थन रोग से ग्रसित हो जाए, तो अगले ब्यांत में भी उस थन से दूध उत्पादन क्षमता कम हो जाती है। थनैला रोग का उपचार काफी मंहगा रहता है तथा कई बार ईलाज के बाद भी थन व अयन ठीक नहीं हो पाते जिससे दूध उत्पादन में कमी आ जाती है। कई बार सभी थन में रोग होने की स्थिति में पशु बेकार हो जाता है।

उपचार एवं रोकथाम :

1. बीमार पशु के अयन एवं थन की सफाई रखनी चाहिए।
2. सर्वप्रथम थनैला रोग से ग्रसित पशु को दूसरे स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए।
3. रोग से ग्रसित पशु के नीचे बिछावन रखना चाहिए जिससे कि बैठने में दर्द न हो तथा बिछावन को दो–तीन दिन में बदल देना चाहिए।
4. थन या अयन के घाव पर मक्खियां ना बैठे, इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।
5. पशु तथा पशु शाला की स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। जिससे रोग दूसरे पशुओं में ना फैले।
6. दूध निकालने से पहले एवं बाद में पशु के थन व अयन को लाल दवा (पोटेशियम परमैंगनेट) के पानी से अच्छे से करना चाहिए तथा दूध निकालने वाले व्यक्ति को भी लाल दवा के पानी से हाथ अच्छी तरह धो लेने चाहिए।
7. थनैला रोग के शुरूआती लक्षणों (दूध में किसी भी तरह का परिवर्तन) देखते ही पशु चिकित्सक से ईलाज शुरू करवा देना चाहिए जिससे कि रोग को बढ़ने से पूर्व ही रोका जा सके अन्यथा थन खराब होने पर पशु बेकार हो जाता है।
8. थन या अयन के ऊपर किसी भी प्रकार के गर्म पानी, तेल या घी की मालिश नहीं करनी चाहिए।
9. यदि रोग ग्रसित पशु के थन, अयन में कोई चोट, खरोंच या कटा हो तो उसको लाल दवा, सेवलॉन या डिटोल के घोल से धोकर एंटीसेप्टिक क्रीम लगाना चाहिए।
10. जीवाणु व संक्रमण को रोकने के लिए पशु चिकित्सक द्वारा एन्टीबॉयोटिक दवाइयाँ मुँह या इन्जेक्शन द्वारा दी जाती है आवश्यकतानुसार थन में दवाई देनी चाहिए।
11. दुग्ध काल पूर्ण होने पर जब पशु दूध देना बन्द कर दे तो पशु के चारों थनों में एन्टीबायोटिक की इन्टारमेमैरी ट्यूब चढ़ा देनी चाहिए जिससे की अगले ब्यांत में पशु को थनैला रोग से बचाया जा सके।
12. कभी–कभी नवजातों के दूध पीते समय थनों पर दांत लग जाते हैं उस पर बोरिक मल्हम, जेनसियन वायलेट या हिमैक्स –क्रीम लगाना चाहिए। पशु में बीमारी होने पर तत्काल निकट के पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर उचित सलाह लेकर चिकित्सा करानी चाहिए ।

थनों के घावः– पशुओं में थन/आयन एक संवेदनशील जगह है जिसमें रख–रखाव की कमी से अथवा सही तरीके से नहीं दूहने से अथवा बाहरी चोट से घाव हो जाते हैं। अगर इन घावों का सही इलाज ना हो तो ये संक्रमित हो जाते है। तथा इनका उपचार कठिन हो जाता है। इनका उपचार एन्टीबायोटिक लोशन एवं इन्जेक्शन द्वारा किया जाता है।

थनों का ट्यूमरः– पशुओं के थनों में ट्यूमर सामान्यतः कम होता है लेकिन गलत रख–रखाव तथा थनों के आस–पास गन्दगी की वजह से ये हो सकता है। लिम्फोसारकोमा प्रकार का ट्यूमर थनों में पाया जाने वाला मुख्य ट्यूमर का प्रकार है। लिम्फोसारकोमा मुख्यतः दुग्ध ग्रन्थि तथा उसके आस–पास की लिम्फनोड्स में पाया जाता है। इस ट्यूमर की वजह से थनों में उस स्थान पर सूजन आ जाती है जो कि पीड़ा दायक अथवा अपीड़ादायक दोनों प्रकार की हो सकती है। शुरूआत में ट्यूमर को थनैला भी समझा जा सकता है किन्तु इसका विकास तेजी से होता है। इसका निदान थनों की भौतिक दशा तथा लक्षणों से किया जा सकता है किन्तु इसका सही पता बॉयोप्सी से ही लगाया जा सकता है। थनों के ट्यूमर का शुरूआत में उपचार किया जा सकता है किन्तु इसके बढ़ने पर प्रभावित थन को निकालना पड़ता है।

पेपीलोमा (वार्ट्स):– यह बोवाइन पेपीलोमा वायरस के कारण होने वाला रोग है। जिसमें थनों पर फाइब्रो–पेपीलोमास हो जाते हैं। ये थनों की त्वचा पर कठोर फाइब्रस संरचना बनाते हैं जिससे दुग्ध उत्पादन में पशु को तकलीफ होती है तथा दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है। इसके लक्षणों से इस रोग की पहचान की जाती है। इसका उपचार मुख्यतः होम्योपैथिक दवाओं द्वारा अथवा स्वः प्रतिरक्षा चिकित्सा द्वारा किया जा सकता है। यदि दुधारु पशुओ की उचित देखभाल की जाए तो काफी हद तक पशुओं को थन के रोगों से बचाया जा सकता है।

–डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा, (मो. 9784511656) डॉ. विक्रम सिंह देवल
एवं प्रो. (डॉ.) ए.पी. सिंह, राजुवास, बीकानेर

गर्मियों में भेड़-बकरियों की प्रबन्ध व्यवस्था

वर्ष 2012 की पशु गणना के अनुसार भेड़ की भारत में कुल जनसंख्या –65.069 मिलियन, बकरी की जनसंख्या 135.17 मिलियन एवं भेड़ का कुल योगदान–12.40 प्रतिशत तथा बकरी का कुल योगदान 26.4 प्रतिशत तक है। हमेशा ज्यादा गर्मी भेड़ व बकरियों को नुकसान पहुंचाती हैं जिससे कि गर्मी से बचने के लिये भेड़ व बकरियों को स्वच्छ व ताजा जल व अच्छी गुणवता वाला हरा चारा व गर्म हवाओं से बचने के लिये आवास व्यवस्था जरूरी होती है। विशेषतः बकरी को "गरीब की गाय" नाम से जाना जाता है। प्रायः अधिक गर्मी पड़ने से भेड़ व बकरियां " हीट स्ट्रेस" में आती है जिससे उत्पादन में कमी आती है।

भेड़ व बकरियों का गर्मी से बचावः– प्रायः गर्मियों से भेड़ व बकरियों को बचाने के निम्न उपाय काम में लेने चाहिए।

गर्मी से बचने के लिये भेड़ व बकरियों को स्वच्छ व शीतल जल पिलाना चाहिये। गर्मी के दिनों में भेड़ व बकरियों को सुबह 6.30 से 10.30 बजे तक व शाम को 4.30 से 6.30 बजे तक चरने के लिये छोड़ना चाहिये। आवास छायादार व स्वच्छ हवादार होना चाहिये। उन्हें गर्मियों से बचने के लिये उचित मात्रा में खनिज मिश्रण (मिनरल मिक्सर) देना चाहिये। भेडों को गर्मी से बचाने के लिये "सियरिगं" (शरीर से ऊन हटाना) करते हैं, बकरियों में गर्मी से बचाव के लिये "ब्सपचचपदह" (शरीर से बाल हटाना) करते है। पेड़ों एवं झाडियों का पाला काटकर भेडों को खिलायें जिससे भेडों को उचित मात्रा में भोजन मिल सके तथा गर्मियों से भी बचाया जा सके। भेड़ व बकरियों को गर्मियों के दिनों में दोपहर के समय चराने के लिये नहीं छोडें।

विशेषतः गर्मियों में प्रोटीन तथा ऊर्जा की कमी आने लगती है जिसको पूरा करने के लिये यूरिया, सीरा व खनिज पदार्थों को चारे की कुट्टी के साथ खिलाया जाये तो यह खुराक हरे चारे और दाने से सस्ती तो होगी एवं अधिक लाभदायक होगी।

गर्मी से होने वाले दुष्प्रभावः

- अधिक गर्मी पड़ने से भेड़ व बकरियों को "हिट स्ट्रेस " की सम्भावना रहती है।
- अधिक गर्मी से भेड़ व बकरियों की दुग्ध उत्पादन क्षमता कम होती है।
- हरे चारे की उपलब्धता कम रहती है जिससे कि उनके शरीर में कमजोरी व पतलापन दिखाई देना व वजन में कमी होने लगती है।
- भेड़ो को चराने ले जाने के बाद बाड़ों की साफ– सफाई नियमित रूप से करनी चाहिये।
- गर्मी के दिनों में अधिक तापमान से उच्च श्वसन दर व शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है जिससे कि श्वांस लेने में समस्या रहती है।
- गर्मी के दिनों में भेड़ व बकरियां अधिक तनाव में रहती है जिससे कि वे अपने आप को आरामदायक महसूस नहीं करती है।
- प्रायः काले और गहरे रंग की बकरी अति संवेदनशील होती है जबकि हल्के रंगं की भेड़ व बकरिया कम संवेदनशील होती है।

अधिक तापमान व नमी के दौरान विशेष देखभालः–

- भेड़ व बकरीयों को छायादार स्थान पर रखना चाहिये।
- भेड़ व बकरी पालन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है विशेष रूप से उनके लिये जो कि भेडों को ऊन उत्पादन के लिये पालते हैं। गर्मी व नमी के दौरान स्वच्छ जल व छाया महत्वपूर्ण कारक है।
- बाड़े की सफाई व पुताई अवश्य करें जिससे कि भेड़ व बकरी को श्वांस लेने में तकलीफ नहीं होती और बीमारी होने की कम समस्या रहती है।
- छाया भेड़ बकरियों में गर्मी भार को कम करेगी जबकि पानी गर्मी फैलने में मदद करेगा।
- गर्मी के दिनों में बाड़े में पंखे व फव्वारे की व्यवस्था करें जिससे कि गर्मी महसूस नहीं होती है।
- झोपडी की व्यवस्था करनी चाहिये जिससे कि अधिक गर्मी महसूस नहीं होगी।
- गर्मी के दिनों में बाडे में समय– समय पर पानी का छिडकाव करें जिससे कि हवा आने पर भेड़ व बकरियों को ठंडक महसूस होती रहे।
- कपडो, केनवास व शीट धातु जाल कपडों आदि से छाया की जा सकती है जिससे कि गर्मी से बचा जा सकता हैं ।
- बकरी गर्मी के दिनों में भेड़ से बेहतर गर्मी बर्दास्त कर सकती है ढीली त्वचा और फ्लेपी कान वाली बकरियां अन्य बकरियों से अधिक गर्मी सहन कर सकती है।
- अंगोरा (Angora) बकरी भेड़ और बकरियों की अन्य नस्लों की तुलना में गर्मी – तनाव के लिये कम सहनशील होती है।

डॉ. मुकेश चन्द शर्मा, डॉ. राजेन्द्र कुमार नागदा एवं डॉ. अनिल मोर्दिया
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा, चित्तौड़गढ़(9414621094)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जुलाई, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी	बाँसवाड़ा, भरतपुर, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर,, दौसा, झुंझुनू, सवाई माधोपुर, अलवर, सिरोही, बाड़मेर, चूरू, अजमेर, सीकर, पाली
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चूरू, नागौर, अजमेर, कोटा , पाली, सिरोही, जोधपुर, अलवर
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	बीकानेर, जैसलमेर, जयपुर, बाड़मेर, जालोर, हनुमानगढ़, जोधपुर
गलघोंटू	गौवंश, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, भरतपुर, दौसा, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, सिरोही, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
ठप्पा रोग (लंगड़ा बुखार)	गौवंश, भैंस	जयपुर, बीकानेर, झुंझुनू, अलवर , जैसलमेर, चित्त ौड़गढ़, हनुमानगढ़, सीकर, श्रीगंगानगर
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, अलवर, नागौर, धौलपुर, झुन्झुनू, अजमेर
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, कोटा, बून्दी, भरतपुर
थाइलेरिओसिस, बबेसिओसिस	गौवंश	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बून्दी, चूरू
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं फीता –कृमि)	गौवंश, भैंस, बकरी, ऊँट	बीकानेर, सीकर, धौलपुर, अलवर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, राजसमन्द, भरतपुर, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

डेयरी उद्यमी चंदनसिंह की चमकी किस्मत

खेती–बाड़ी तक सीमित रहने वाले चंदनसिंह ने जब दो गायों का दूध बेचने का कार्य शुरू किया तब सोचा भी नहीं था कि एक दिन उसके डेयरी फार्म से 250 लीटर दूध का उत्पादन और बिक्री शुरू हो जायेगी। शुरूआत निश्चित रूप से संघर्ष भरी थी लेकिन चंदनसिंह के हौसले व पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर के मार्ग–दर्शन में आज इस मुकाम पर है। चंदनसिंह की इस सफलता से प्रेरित होकर आसपास के दूसरे पशुपालकों ने डेयरी से होने वाले फायदे देखकर डेयरी व्यवसाय को गंभीरता से लेना प्रारम्भ कर दिया है। गांव वालों के दूध की बिक्री की व्यवस्था भी स्वंय चंदनसिंह ने शुरू की है। गांव वाले रोज एक सौ पचास लीटर से ज्यादा दूध चंदनसिंह की डेयरी को बेचने के लिए देते हैं। उनकी स्वंय की डेयरी फॉर्म से भी हर रोज करीब एक सौ पचास लीटर से ज्यादा दूध निकलता है। जोधपुर जिले के मण्डोर पंचायत समिति के पालड़ी पंवारा गांव के रहने वाले चंदनसिंह आज अपने गांव के उन्नत पशुपालक हैं। कृषक के साथ–साथ कामयाब पशुपालक के रूप में उसके परिवार की पहचान बनी है। आज उनके पास 35 गायें है। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा आयोजित शिविर में चंदनसिंह ने शिविर प्रभारी एवं उनकी टीम से डेयरी व्यवसाय प्रारम्भ करने की अपने मन की बात जाहिर की । केन्द्र के प्रभारी ने नाबार्ड बैंक से अनुदान राशि मिलने की जानकारी दी और इस प्रकार चंदनसिंह के एक प्रगतिशील पशुपालक बनने की कहानी प्रारम्भ हुई। केन्द्र प्रभारी से दूधारू पशुओं के लिए संतुलित पशुआहार, टीकाकरण, आवास व्यवस्था एवं स्वदेशी गौवंश संरक्षण के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। चारे की पौष्टिकता को बढ़ाने के लिए यूरिया द्वारा उपचारित करने वं हरे चारे द्वारा साईलेज बनाने के लिए प्रेरित किया। केन्द्र की सलाह से डेयरी व्यवसाय से उनके लिए जैविक खाद् और कीटनाशकों की व्यवस्था हो गई तथा स्वंय द्वारा तैयार किये गये कम्पोस्ट व गोबर खाद् और केंचुआ खाद् का उपयोग करते हैं। जैविक खाद् और कीटनाशक के उपयोग से उनकी पैदावार में भी वृद्धि हुई है और खेती की लागत भी बहुत कम हो गई है। कामयाब उद्यमी और संवेदनशील प्रतिनिधि के रूप में पहचान बनाने वाले चंदनसिंह का मानना है कि खेती, पशुपालन और डेयरी तीनों के संयुक्त उद्यम से जोधपुर का किसान समृद्ध हो सकता हैं। **सम्पर्क– चंदनसिंह मो. 9680676756**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

अस्वच्छ दूध से होने वाली बीमारियां

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनो !

मनुष्य के आहार में दूध एक सन्तुलित आहार का कार्य करता है। इसमें भोजन के विभिन्न अवयव उचित मात्रा तथा अनुपात में पाये जाते हैं जिनका मनुष्य की आंतों से सरलतापूर्वक अवशोषण कर लिया जाता है। इसलिए दूध बच्चों, वयस्कों एवं वृद्धों सभी के लिए एक आदर्श भोजन माना जाता है। हमारे देश के अधिकांश लोग शाकाहारी हैं और दूध एक ऐसा पेय पदार्थ है जो सभी आवश्यक अमीनो अम्ल, वसीय अम्ल एवं विटामिन्स की पूर्ति करता है। दूध मे कैल्शियम एवं फॉस्फोरस पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। दूध मनुष्यों के साथ–साथ जीवाणुओं की वृद्धि एवं विकास के लिए भी एक आदर्श माध्यम है क्योंकि जीवाणुओं को अपनी वृद्धि के लिए प्रोटीन्स, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन्स एवं खनिज लवणों की आवश्यकता होती है जो इन्हें दूध से आसानी से प्राप्त हो जाते हैं। जीवाणुओं की वृद्धि के कारण दूध में कुछ असमानता आ जाती हैं और यह सामान्य दूध से भिन्न हो जाता है। कभी–कभी ग्वाले की अनभिज्ञता के कारण स्थिति और जटिल हो जाती है और दूध में बदबू और खट्टेपन की गन्ध आने लगती है तथा दूध खराब हो जाता है तथा आर्थिक हानि का कारण बनता है। कभी–कभी दूध देखने पर खराब महसूस नहीं होता परन्तु इसमें रोग फैलाने वाले जीवाणु अथवा विषाणु पाये जाते हैं जो मनुष्यों में, दूध के माध्यम से पहुंचकर तरह–तरह की बीमारियां उत्पन्न करते हैं। यह बीमारियां प्रमुख रूप से या तो अस्वस्थ दूध उत्पादन अन्यथा अस्वस्थ पशुओं/ग्वालों द्वारा फैलती है। दूध से मनुष्यों में फैलने वाली बीमारियों में मुख्यतः गो जातीय टी.बी., तंरगित ज्वर, एन्थ्रेक्स, आंत्र ज्वर, हैजा, जठरान्त्र कोश, पूयिक गलकोश रोग हैं। अतः ऐसी जटिल परिस्थितियों से बचने के लिए दूध दुहने से पहले, दूध दुहते समय एवं दूध पीने के समय कुछ सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए। कोई पशु बीमार है तो इसे बाड़े के अन्य पशुओं से अलग स्थान पर रखना चाहिए एवं इसका कुशल चिकित्सक द्वारा तुरन्त इलाज करवाना चाहिए। विभिन्न रोगों से बचाने के लिए टीकाकरण अवश्य करायें। दूध दुहने, दूध के भण्डारण एवं वितरण में प्रयोग आने वाले बर्तनों को भलीभांति साफ करके निर्जलीकृत करना चाहिए। दुग्ध उत्पादन एवं दुग्ध व्यवसाय में लगे लोग किसी भी रोग से पीड़ित नहीं होने चाहिए। इस श्रृंखला में प्रयुक्त प्रत्येक व्यक्ति का निश्चित समयान्तराल बाद कुशल चिकित्सक द्वारा परीक्षण कराना चाहिए। दूध को पीने से पहले इसका पाश्चुरीकरण अथवा निर्जलीकरण अवश्य कर लेना चाहिए।

–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **जुलाई 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
डॉ. टी.के. गहलोत **9414137029** सेवानिवृत्त प्रोफेसर, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	ऊंटों में पाये जाने वाले शल्य रोगो की जानकारी एवं उपचार	04.07.2019
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा **9784511656** निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	मौसम परिवर्तन से पशुओं पर होने वाले दुष्प्रभाव व रोकथाम	18.07.2019

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। **1800 180 6224**